International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 4 January – February - 2026

21 वीं सदी में हिंदी भाषा का तकनीकी विकास

डॉ. सारिका राजाराम कांबळे

पोस्ट हिंदी विभाग, श्री शहाजी छ.महाविद्यालय, कोल्हापुर

Corresponding Author – डॉ. सारिका राजाराम कांबळे

DOI - 10.5281/zenodo.18491030

सार (Abstract):

21वीं सदी वैश्वीकरण, तकनीकी क्रांति और डिजिटल संचार का माध्यम की सदीहै | इनपरिवर्तनोंकासभी भाषाओं पर गहरा प्रभाव पड़ा हैं | जिसके कारण सभी भाषाओं में तकनीकी बदलाव हो रहे है | हिंदीभाषा ने भी इस बदलाव को स्वीकार कर उसमें आए बदलावों कोएक चुनौती के रूप में स्वीकार कर अपने आप को तकनीकी ढांचे में ढालने की तयारी कर 21 वी सदी की डिजिटल क्रांतिमें अपना विकास कर दिखाया| यह शोध पत्र 21 वी सदीमें हिंदी भाषा के विकास, उसके स्वरुप में आए परिवर्तनों, चुनौतियों तथा संभावनाओं का विश्लेषण स्पष्ट करता है |

मुख्य शब्द (Keywords): भाषा, तकनीकी, मिडिया, शिक्षा, सोशल मिडिया,तकनीकी, डिजिटल|

प्रस्तावना:

मनुष्य के जीवन में भाषा का महत्वपूर्णस्थान है | मनुष्य अपने विचारों,भावनाओं और अनुभवों को भाषा के माध्यमसे व्यक्त करता है | भारत बहुभाषी देश है, इसमें हर क्षेत्र की भाषा और बोली अलग-अलग है परंतु हिंदी भाषा को एक संपर्क भाषा के रूप में विशेष स्थान है |हिंदी भाषा भारत की प्रमुख भाषाओँ में से एक है, जो आज करोड़ों लोगों की मातृभाषा, संपर्क भाषा और राजभाषा के रूप में प्रयोग की जाती है| हिंदी भाषा भारतीय समाज को जोड़ने का प्रयास करती है| आधुनिक काल में हिंदी भाषा ने नए आयाम प्राप्त किए है | स्वतंत्रता आंदोलन के समय हिंदी राष्ट्रीय चेतनाकी भाषा बनी और देशवासियों को एकता के सूत्र में बांधने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया | देश स्वतंत्रता के बाद हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हो जाने से इसके प्रयोग क्षेत्र में अधिक विस्तार हुआ | शिक्षा, प्रशासन, न्याय व्यवस्था, मीडिया और संचार आदि क्षेत्रों में हिंदी भाषा का महत्त्व निरंतर बढ़ता जा रहा है |

वर्तमान युग में हिंदी भाषा प्रशासन, शिक्षा, मीडिया, साहित्यऔर तकनीकी क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है | हिंदीभाषा के विकास का अध्ययन आवश्यक है | आज के डिजिटल युग में हिंदी भाषा नई चुनौतियों और संभावनाओं के साथ आगे बढ़ रही है |

हिंदी भाषा की उत्पत्ति :

भारत में प्रमुख रूप से आर्य परिवार एवं द्रविड़ परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं| उत्तर भारत की भाषाएँ आर्य परिवार की तथा दक्षिण भारत की भाषाएँ द्रविड़ परिवार की हैं| उत्तर भारत की आर्य भाषाओँ में संस्कृत सबसे प्राचीन है, जिसका प्राचीनतम रूपऋग्वेद में मिलता हैं, इसी की उत्तराधिकारिणी हिंदी है | इस संदर्भ में डॉ.हणमंतराव पाटील कहते है – "ई. 1000 के बाद मध्यकालीन आर्यभाषा के अंतिम रूप अपभ्रंश भाषाओँ ने धीरे-धीरे बदलकर आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओँ का रूप ग्रहण करलिया था और गंगाघाटी में प्रयाग या काशी तक

बोली जाने वाली शौरसेनी तथा अर्धमागधी की अपभ्रंशों ने हिंदी भाषा के समस्त प्रधान रूपों को जन्म दिया | परंतु इस बात पर विचार करना आवश्यक है कि हिंदी ने एकाएक ही यह रूप धारण नहीं किया है, बल्किसंस्कृत से लेकर प्राकृतसे अपभ्रंश-अवहट्ट से होते हुए अब तक की सोपानयात्रा तय की है |" प्रस्तुत संदर्भ से हिंदी भाषा का विकास शुरुवात के दौर में कैसे होते गया इस बात का जानकारी प्राप्त होती है | हिंदी भाषा के विकासक्रम को विद्वानों ने तीन भागों में बाँटा है|

1. **प्राचीन भारतीय आर्यभाषा काल (1500 ई.पूर्वसे 500 ई. तक)-**

   प्राचीन भारतीय आर्यभाषा काल में वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत दो भाषाएँ थी|

2. **मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा काल (500 ई. पूर्व से 1000 ई. तक)-**

   इसमें तीन भाषाएँ विकसित हुई| पालि भाषा, प्राकृत भाषा, अपभ्रंश भाषा| संस्कृत से पालि और प्राकृत भाषाएं विकसित हुई | प्राकृत के विभिन्न रूपों (जैसे- शौरसेनी, मागधी) से अपभ्रंश का जन्म हुआ, जो आधुनिक भाषाओं की जननी बनी | अपभ्रंश के एक रूप अवहट्ट से पुरानी हिंदी का उद्भव माना जाता है |

3. **आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल (1000 ई. से अब तक) -**

   आदिकाल- हिंदी के शुरुआत रूप डिंगल-पिंगल भाषा का प्रयोग हुआ | डिंगल भाषा =अपभ्रंश+राजस्थानीके योग यह भाषा निर्माण हुई | पिंगल भाषा = अपभ्रंश+ब्रजभाषा के योग से इस भाषा का निर्माण हुआ |

   मध्यकाल– भक्तिकाल में ब्रजभाषा (सूरदास, तुलसीदास) और अवधी(जायसी) का साहित्यिक विकास हुआ |

   आधुनिककाल – भारतेंदुयुगसे खडी बोली का मानकीकरण शुरू हुआ | गद्य(कहानी,उपन्यास , निबंध) आदि का विकास हुआ | हिंदी भाषा संस्कृत से विकसित होते हुए क्षेत्रीय भाषाओँ से होते हुए खडी बोली के मानक रूप में विकसित हुई |

हिंदी भाषा को विकासक्रम की दृष्टि से देखा जाए तो संस्कृत –प्राकृत-अपभ्रंश-अवहट्ट-प्रारंभिक हिंदी-आधुनिकहिंदी

इस तरह से हिंदी भाषा का विकास देखा जा सकता है |

स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी की भूमिका:

स्वतंत्रतासंग्राम में हिंदी भाषा ने जनजागरण का कार्य किया | हिंदी समाचार पत्रों और साहित्य ने लोगों में देशभक्ति की भावना को जागृत किया | महात्मागांधी ने हिंदीकोराष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने पर बल दिया | हिंदी ने देश के विभिन्न क्षेत्रों को जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई|

संविधान में हिंदी का स्थान:

भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है | सरकारी कार्यों, शिक्षाऔर प्रशासन में हिंदी का प्रयोग बढ़ा है | इससे हिंदी भाषा को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली |

आधुनिक युग में हिंदी भाषा का महत्त्व दिन –ब-दिन बढ़ता जा रहा है | आज हिंदी तकनीकी के साथ जुड़ चुकी है | हिंदी भाषा ने तकनीकी विकास में उन्नति कर दिखाई है| तकनीकी की क्षेत्र में निम्नलिखित जगह पर हिंदी का प्रयोग कैसे होता है इसका विस्तार से विवेचन देख सकते है |

मीडिया और हिंदी:

समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, रेडिओ और टेलिविजन ने हिंदी को जन जन तक पहुँचाया है | 21 वी सदी में हिंदी

समाचार चैनलों और एफ़म रेडिओ की संख्या में काफी वृद्धि हुई है | इन माध्यमों के जरिए आम लोग बोलचाल की भाषा में हिंदी भाषा का कम अधिक मात्रा में प्रयोग करते हुए नजर आते है | अन्य भाषी लोग भी इस माध्यम से भाषा को सीखकर रोजमर्रा में हिंदी भाषा का प्रयोग बाजार, दुकान,आदि जगह पर कर रहे है |

डिजिटल माध्यम:

डिजिटल युग में संचार के साधनों में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है | इंटरनेट, स्मार्ट फोन, सोशल मीडिया, ई-मेल, वेबसाइट, ब्लॉगऔर अलग अलग ऐप्स के माध्यम से आज हिंदी भाषा का व्यापक उपयोग हो रहा है | पहले जहाँ हिंदी का प्रयोग मुख्यतःपुस्तकों, समाचार पत्रों और रेडिओ-टीवी तक सीमित था वहीं अब डिजिटल माध्यम ने हिंदी को वैश्विक पहचान दी है | जैसे – आज किसी भी किताब को खोजना हो तो हम ऑनलाइन उसे बुक पीडीएफ पढ़ सकते है| किसी भी जानकारी को हिंदी भाषा में पढ़ सकते है |इंटरनेट, मोबाइल फोन, सोशल मीडिया और ब्लॉगिंग ने हिंदी के प्रयोग को व्यापक बनाया है |आज हिंदी में वेबसाइट ई- पुस्तकें,ऑनलाइन समाचार पत्र और युटूयब चैनल उपलब्ध है |

कंप्यूटर और हिंदी:

यूनिकोड, हिंदी टाइपिंग टूल्स और वॉइस टू टेक्स्ट तकनीकी ने हिंदी भाषा को डिजिटल दुनिया में सशक्त किया है | इससे हिंदी काप्रयोग शिक्षा, प्रशासन और व्यापार में बढ़ा है | टाइपिंग में लगने वाले समय की बचत हो रही है | कम समय में अधिक काम हो रहे है |

सोशल मीडिया:

फेसबुक,व्हाट्स ऐप, ट्विटर और इंस्टाग्राम जैसेमंचों पर हिंदी का प्रयोग तेजी से बढ़ा है | इससे बोलचाल की हिंदी, मिश्रित भाषा (हिंग्लिश) और नए शब्दों का विकास हुआ है | शब्दों का संक्षिप्त रूप भी प्रचलित हुए है जे1, जी.एम्.जी.एन.,,टी सी,आदि कईसंक्षिप्त शब्दों का प्रयोग प्रचलित हो रहे है |

शिक्षा और हिंदी:

शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी माध्यम विद्यालयों और विश्वविद्यालयोंकी भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है | ऑनलाइन शिक्षा, ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म और डिजिटल पाठ्य सामग्री ने हिंदी शिक्षा को नई दिशा दी है| जैसे-गूगल क्लास रूम, गूगल मिट , झूम, आदि ऐप्स के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में काफी परिवर्तन आए है|

चुनौतियाँ:

वर्तमान युग में हिंदी भाषा का विकास तेजी से हो रहा है फिर भीहिंदी भाषा के सामने कई चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता है |

अंग्रेजी का बढ़ता प्रभाव :वैश्विक स्तर पर अंग्रेजी का प्रभुत्व होने के कारण शिक्षा, रोजगार और तकनीकी क्षेत्रों में हिंदी की अपेक्षा अंग्रेजी को अधिक महत्त्व दिया जा रहा है | इससे हिंदी के प्रयोग में कमी देखी जा रही है \

शुद्ध हिंदी के प्रयोग की कमी :सोशल मीडिया और इंटरनेट पर हिंदी का प्रयोग बढ़ा है, परंतु शुद्ध व् मानक रूप हिंदी के स्थान पर मिश्रित भाषा का प्रचलन अधिकहो गया है, जिससे भाषा की शुद्धता पर प्रभाव हो रहा है |

शिक्षाव्यवस्था में उपेक्षा: कई निजी विद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों में हिंदी की अपेक्षा अंग्रेजी माध्यम को प्रथमता दी जाती है | इससेछात्रों में हिंदी के प्रति रूचि कम होती दिखाई देती है | सभीका सोचना यही है कि हिंदी माध्यम से ज्यादा अंग्रेजी का चयन किया जाए तो अच्छी नौकरी मिल सकती है | इसीसोच के कारण हिंदी भाषा की उपेक्षा होती नजर आ रही है|

साहित्य सृजन में कमी: मनोरंजन के डिजिटल साधनों के बढ़ते प्रयोग से साहित्य पढने और लिखने के प्रति की जिज्ञासा कम होती नजर आ रही है | छात्रों का ध्यान पढने लिखने की अपेक्षा सोशल मीडिया परअधिक समय गवाने में जाता है जिससे छात्रोंकी साहित्य के प्रति रूचि कम होती नजर आ रही है |

हिंदी भाषा के विकास में समाधान (उपाय):

- शिक्षा में हिंदी का सशक्त उपयोग –विद्यालयों और उच्च शिक्षा में हिंदी माध्यम को बढ़ावा देने तथा गुणवत्तापूर्ण हिंदी पाठ्य साम्रगी उपलब्ध कराना |
- डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर हिंदी का विस्तार – वेबसाइट, ऐप,सोशल मीडिया और ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म पर हिंदी कंटेंट को बढ़ावा देना |
- तकनीकी शब्दावली का विकास –विज्ञान, तकनीकी और प्रबंधन जैसेक्षेत्रों के लिए सरल और मानकीकृत हिंदी शब्दावली तैयार करना |
- राजभाषा के रूप में प्रभावी क्रियान्वयन- सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को अनिवार्य और व्यावहारिक बनाना |
- साहित्य और रचनात्मक लेखन को प्रोत्साहन – लेखकों, कवियों और पत्रकारों को प्रोत्साहन देकर नई पीढ़ी को हिंदी साहित्य से जुड़ना |
- हिंदी अनुवाद कार्य को बढ़ावा – विदेशी और अन्य भारतीय भाषाओँ के श्रेष्ठ ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद करज्ञानकाविस्तारकरना|
- युवापीढ़ीमेंजागरूकता –प्रतियोगिताओं, कार्यशालाओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं को हिंदी के प्रति आकर्षित करना|

निष्कर्ष:

हिं:दी भाषा का विकास एक दीर्घकालीन, निरंतर और गतिशील प्रक्रिया रही है | संस्कृत,प्राकृत और अपभ्रंश से होकर आधुनिक हिंदी तक की यात्रा ने इसे समृद्ध,सशक्त और व्यापक जनभाषा के रूप में स्थापित किया है | विभिन्न ऐतिहासिक कालखंडों, सामाजिक परिवर्तनों और सांस्कृतिक आंदोलनों ने हिंदी के स्वरुप को निरंतर प्रभावित किया है | भक्ति आंदोलन, रीतिकालीन साहित्य, आधुनिकयुगके राष्ट्रीय चेतना से जुड़े साहित्य और स्वतंत्रता आंदोलन ने हिंदी भाषा को जन मानस से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई | साथही पत्रकारिता, शिक्षा,प्रशासन और तकनीकी माध्यमों में हिंदी बढ़ाते प्रयोग ने वैश्विक स्तर पर पहचान दी है| वर्तमान डिजिटल युग में हिंदी भाषा नए रूपों में विकसित हो रही है| सोशल मीडिया, इंटरनेट आदि ने हिंदी के प्रचार-प्रसार को अधिक व्यापक बनाया है| यह स्पष्ट है कि हिंदी केवल एक संप्रेषण का माध्यम नहीं,बल्कि भारतीय संस्कृति, परंपरा और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक भी है | अत: कहा जा सकता है कि हिंदी भाषा का विकास केवल अतीत की उपलब्धि नहीं है बल्कि वर्तमान और भविष्य की आवश्यकता भी है | इसकेसंरक्षण, संवर्धन और आधुनिकीकरण के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक है ताकि हिंदी वैश्विक स्तर पर अपनी सशक्त पहचान बनाए रख सके और आनेवाली पीढ़ियों के लिए एक समृद्ध भाषा के रूप में बनी रहे |

संदर्भ सूची:

1 डॉ. हणमंतराव पाटील –भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा
2 आचार्य रामचंद्र शुक्ल – हिंदी साहित्य का इतिहास
3 Sugamstudy.com
4 Google.com